* अरस्तू (Aristotle)

- अरस्तू 'लाइसियम' नामक शिक्षा संस्थान की स्थापना की।
- पाश्चात्य निगमन तर्क के जनकदाता माने जाते हैं।

* अरस्तू के अनुसार ज्ञान के तीन स्तर हैं-

- प्रथम है इन्द्रियानुभव जिसके द्वारा हमें केवल विशेषों का पृथक-पृथक ज्ञान होता है।
- द्वितीय है पदार्थ विज्ञान जिसके द्वारा हम विशेषों में सामान्य को खोजते हैं, उनके कार्य-कारण भाव सम्बन्ध को जानते हैं और उस ज्ञान को जीवन के उपयोग में लाते हैं।
- तृतीय ज्ञान है तत्व विज्ञान या दर्शन। यह सर्वोत्तम है। यह परम तत्व या परम सामान्य का, शुद्ध सत्ता का, 'सत्' का ज्ञान है। यह परमार्थतत्व के शुद्धस्वरूप का ज्ञान है। यह तत्व का दर्शन है।

अरस्तू के अनुसार संसार में दो ही वस्तुएँ हैं- एक 'द्रव्य' और दूसरे जिसके परिणाम या 'पर्याय'।

परम द्रव्य सब द्रव्यों का द्रव्य है और सारे पर्याय का कारण है।

- दर्शन का लक्ष्य इन द्रव्यों का ज्ञान प्राप्त करना है।
- अरस्तू के अनुसार प्लेटो का अपराध परमार्थ और व्यवहार का 'द्वैतवाद' है।
- प्लेटो का परमार्थ है विज्ञान (Idea) और व्यवहार इन्द्रियानुभव (Sense) विज्ञान जगत सत्य और बाह्यजगत मिथ्या है।
- अरस्तू के अनुसार विज्ञान सत्य है। शुद्ध सत्ता ही शुद्धचित है। किन्तु वे विज्ञान जगत को बाह्य जगत से भिन्न न मानकर उसी में अनुस्यूत मानते हैं। परमार्थ व्यवहार में अन्तर्निहित है।
- अरस्तू के अनुसार सामान्य (Form or universal) बुद्धि की कोरी कल्पना नहीं है, किन्तु वास्तविक सत्य है। यह विभिन्न वस्तुओं में अनुगत या अनुस्यूत है।
- अरस्तू कारणता सिद्धांत को मानते हैं एवं चार कारण मानते हैं- (1) उपादान कारण (2) स्वरूप कारण (3) निमित्त कारण और (4) लक्ष्य कारण
- सृष्टि का आदि निमित्त कारण ईश्वर है, जो स्वयं अगतिशील और अपरिणामी होते हुए भी सारी गति और परिणाम का जनक है और वही सृष्टि का चरम लक्ष्य है जिसको प्राप्त करने के लिए सृष्टि गतिशील है।

- अरस्तू को निगमन तर्क (Deductive Logic) के जनक माने जाते हैं। निगमन विधि में विशेष वाक्यों की सत्यता सामान्य वाक्यों से निकालते हैं। Ex —

All man are mortal — सामान्य वाक्य

Ram is a man — विशेष वाक्य

∴ Ram is mortal.

- वाच्य धर्म (Predicables) की संख्या पांच है। (5)
- आकार (Figures) की संख्या चार है (4) I, II, III, IV
- संयोग (Mood) की संख्या उन्नीस है। (19)

- अरस्तू चार कारण को आगे चलकर दो कारण में ही समाहित कर दिये है और दो कारण की ही मूल कारण मानते हैं —
(1) उपादान (Material) तथा (2) स्वरूप (Formal)
- स्वरूप (Form) सामान्य है और उपादान द्रव्य (matter) है।
- यहां प्लेटो सामान्य और द्रव्य को दो मानते हैं इसलिए वह द्वैतवादी कहे जाते हैं जबकि अरस्तू दोनों को एक मानते हैं।

अरस्तू के अनुसार दोनों सम्बद्ध हैं। सामान्य विशेष में अनुस्यूत है।
- प्लेटो वस्तु जगत को असत् तथा विज्ञान जगत को सत् मानते हैं।
- अरस्तू ने प्लेटो की आदर्शवादी नैतिकता के स्थान पर व्यावहारिक नैतिकता की शिक्षा दी है।
- अरस्तू का मध्यम मार्ग स्वर्णिम (Golden) माना जाता है